दीदी मनमोहिनी जी के साथ का अनुभव

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, दीदी के प्रति अपना अनुभव इस प्रकार सुनाती हैं-

मुंबई में ऑप्रेशन

एक दिन दीदी अपने कमरे में गिर गई थी, थोड़ी चोट भी लगी थी। थोड़ा बी.पी. हाई था। फिर दीदी का एक्सरे किया गया तो बायीं तरफ ब्रेन में, लीची जितनी गांठ दिखाई पड़ी। फिर कई डॉक्टरों की राय ली गई, सभी का मत था कि दीदी का ऑप्रेशन होना चाहिए। यहाँ यह भी बात सामने आई कि एक तो दीदी उम्र वाली हैं, दूसरा यह भी था कि बी.पी. ऊपर-नीचे है, शुगर भी है। फिर राय-सलाह होती रही। डॉक्टर्स की राय से ऑप्रेशन फाइनल हुआ। मुम्बई में डॉक्टर्स ने कहा, आप शाम को दीदी को थोड़ा घुमाने-फिराने ले जा सकते हो। दीदी आई तो हॉस्पिटल में थी। शाम को नरीमन प्वाइंट पर घुमाने ले जाते थे। दादी जानकी कोलाबा में रहती थी। दीदी हॉस्पिटल में थी। गामदेवी से दीदी को कार लेने जाती थी, इधर से दीदी निकलती थी, उधर से दादी जानकी निकलती थी। नरीमन प्वाइंट पर जाकर सभी दादियाँ मिलते थे और दीदी से थोड़ा समय रूहरिहान करते थे, हँस-बहलके आते थे। डॉ क्ट र की छुट्टी थी, वह कहता था कि दीदी को घुमाओ, फिराओ ताकि दीदी कुछ सोचे नहीं।

दो सितारों के मिलन की घड़ी

बीच में एक बात यह भी आई कि डॉक्टर्स ने कहा, दीदी को छोटा-सा ट्यूमर है। वह तो बहनों ने सुना और दीदी को नहीं बताया। दीदी को यही कहा, ऑप्रेशन होना है लेकिन किसका ऑप्रेशन, वो नाम नहीं बताया। तो एक दिन दीदी डॉ. भगवती को कहती है कि डॉक्टर, तुम मेरे भाई हो ना, सच बताओ, किसका ऑप्रेशन करना है, ये बहनें मेरे से छिपाती हैं, कुछ सुनाती नहीं हैं, समझती हैं, मैं कोई डरूँगी। मेरे भाई हो ना, मुझे सच बताओ, किसका ऑप्रेशन है? डॉक्टर ने कहा, सच तो यह है कि इतनी छोटी गांठ है, उसका ऑप्रेशन है, चुम्बक का है, यह सच बात है। दीदी ने कहा, ठीक है। दादी जानकी, बृजइन्द्रा, सब दीदी के पास आते थे। सुबह 10.30 का रिकॉर्ड बजता तो ये योग करते, पूरी दिनचर्या ठीक चलती थी। नर्स आती थी, देखती थी, ये सब चटाई बिछाके बैठ जाते हैं, उसे मालूम तो था, ये लोग कौन हैं। दीदी कहती थी, यह हॉस्पिटल नहीं है, सत्संग है। दीदी कभी हँसती थी, रूहरिहान

करती थी, कभी लेट जाती थी। एक दिन हमने भी पूछा था, दीदी, लूडो लाएँ, खेलेंगे? जब हम गई, वो तीन मिनट की सीन तो क्या बताऊँ! जितने दीदी को प्रेम के मोती बहाने थे, वो उसी घड़ी बहाए। बाबा ने कहा है, दो सितारों का मिलन होता है, वो दो सितारों के मिलन की घड़ी थी। बाबा ने ड्रामा में ऐसी विचित्र जोड़ी बनाई जो सभी कहते, शरीर तो दो हैं पर आत्मा एक है। प्रैक्टिकल ऐसा है भी। नेचुरल मिलने की घड़ी में भी ऐसे रहा। फिर गुलजार बहन, निर्वैर भाई, जगदीश भाई सब पहुँचे, दीदी से मिले। दीदी की गोद में बैठे। दीदी ने कहा, तुम लोग तो बच्चे हो, आओ, बैठो। ऐसे मिलकर हम सभी हलके होकर बैठे थे। दीदी हलकी हो गई, हर्षितचित्त हो गई। शाम को हम घूमने भी गए।

बाबा स्पेशल मिलने आए

फिर एक पाँच मिनट की प्राइवेट बात सुनाउँ क्या? हमने कहा, गुलजार, बाबा को कहो, दो मिनट मिलके जाए, प्राइवेट में आए। तो दीदी तो बाबा की लाडली थी। बाबा बिल्कुल थोड़े मिनटों के लिए, प्राइवेट कमरे में, स्पेशल मिलने आए। दीदी से मिले, हँसे-बहले। दीदी को बोले, तुम तो मेरी स्पेशल बेटी हो, देखो, तेरे लिए स्पेशल बाबा आया है क्योंकि बाबा तो आता नहीं है ना यहाँ। खबर भी नहीं किसको। दीदी, तुम कोई फिकर नहीं करना, बाबा तुम्हारे साथ है, बाबा जो कहता है तुम नंबरवन हो, तो नंबरवन जो विन करेगा, उसे पेपर तो पास करना पड़ेगा ना। तुम तो बाबा की गोदी में बैठी हो ऐसे कहते बाबा हँसते-बहलते रहे। फिर ऑप्रेशन हुआ। ऑप्रेशन के दिन तो मिलने नहीं दिया। अगले दिन हम गई, हमने कहा, दीदी। तो दीदी ने आँखें खोली, देखा, मुसकराया, बोल नहीं सकी। तीसरे दिन भी मिलकर आई। मैंने कहा, ओमशान्ति। दीदी ने धीरे से कहा, ओमशान्ति। उस समय दीदी पूरी कांशस में थी और तीसरे दिन थोड़ा जूस मुख से लेती रही। ऑप्रेशन बिल्कुल ठीक हुआ।

******